

भारतीय जनवाक्य को केवल एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है, वह है 'मानसून'। मानसून का सीधा अर्थ होता है - प्रचलित पत्तों की दिशा में होने वाला परिवर्तन। मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - ऋतु। अरब नाविकों द्वारा इसका प्रयोग उन हवाओं के लिए किया गया जो ऋतु परिवर्तन के साथ विपरीत दिशा में बहा करती हैं। सर्वप्रथम अरब भूगोलकर्ता अबू-मलूकी ने इन हवाओं के बारे में बताया। भारतीय उपमहादीप में यह परिवर्तन स्पष्ट है। भारत में मौसम परिवर्तन मुख्य रूप से हवाओं की दिशा पर निर्भर करता है और वर्षा की मात्रा तो मानसूनी हवाओं पर ही निर्भर है।

आरंभ से ही मानसूनी हवाओं की उत्पत्ति, उत्पत्ति प्रभाव, इसका प्रभाव तथा इसके होने वाली वर्षा की मात्रा की व्याख्या करने की कोशिशें होती रही हैं, परंतु इसे पूर्णतः स्पष्ट नहीं किया जा सका है। जिन विद्वानों ने मानसून की व्याख्या संभव ही लगी है, वे निम्नलिखित हैं-

1. प्रारंभिक या निरसम्मम कालीन विचारधारा (Classical theory)

इस विद्यांत को प्रतिपादित करने में ब्रिटिश भौतम वैज्ञानिक - स्टाफ, वेकर आदि की भूमिका रही। यह विद्यांत मुख्यतः तापीय प्रभाव पर आधारित है, अतः इसे 'तापीय प्रभाव विद्यांत' भी कहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य के उत्तरायण होने के बाद अत्यधिक गर्मी के कारण भारतीय उपमहादीप के पश्चिमोत्तर भाग में अधिक निम्न दाब का क्षेत्र बन जाता है, जबकि हिन्द महासागर के उपर उच्च दाब का क्षेत्र बना रहता है। फलतः समुद्री उच्च-दाब क्षेत्र से वायु स्थलीय निम्न दाब क्षेत्र की ओर चलती है। समुद्री क्षेत्र से आने के कारण ये पवन जनवाक्य से परिपूर्ण होती है तथा भारतीय उपमहादीप के उपर प्रमद वर्षा करती है, जिसे मानसूनी वर्षा कहते हैं। दूषण से आने के कारण इसे दूषण मानसून कहते हैं।

शीत ऋतु में स्थिति एकदम विपरीत होती है। सूर्य के दक्षिणाधन होने से पश्चिमांचल भारत का क्षेत्र उच्च दाब का क्षेत्र बन जाता है और इस स्थिति से पवनें उत्पन्न होती हैं। बंगाल की खाड़ी में आने वाली के बाद 3000 मानसून की शुद्ध वायु में धारणा आती है, पुनः पेरम के नियमानुसार दाहिने मुड़कर तमिलनाडु के तट पर वर्षा करती है, जिसे शक्तिशाली मानसूनी वर्षा या 3000 मानसूनी वर्षा कहते हैं।

आंशिक सिद्धांत के रूप में इसकी महत्ता अव्यक्ति है, पर मानसून को स्पष्ट करने में इसकी महत्ता अव्यक्ति है, भूमिका सीमित है। स्पष्ट है कि सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणाधन होने का समय व प्रभाव निश्चित होता है जबकि मानसून की आंशिकता विख्यात है। अतः इस आधार पर इस सिद्धांत की प्रालोचना होती है।

2. आई. टी. सी. जेड = सिद्धांत (I.T.C.Z Theory) -

3000 व्यापारिक हवा तथा 3000 व्यापारिक हवा विषुवत रेखा के पास मिलती हैं। इस मिलन क्षेत्र को 'अंतरा उष्ण अभिसरण क्षेत्र' (Inter-Tropical Convergence zone) कहते हैं। ऋतु परिवर्तन (सूर्य के उत्तरायण व दक्षिणाधन होने से) के साथ ही I.T.C.Z की अवस्थिति भी बदलती है। यह ग्रीष्म ऋतु में विषुवत रेखा के उत्तर एवं शीत ऋतु में दक्षिण विषुवत रेखा के पास कर पेरम के नियमानुसार दाहिने मुड़कर उत्तर-पूर्व दिशा में बहने लगती है। यही वायु 3000 मानसून के रूप में भारतीय उपमहादीप पर अव्यक्ति वर्षा लाती है।

3. जेट स्ट्रीम सिद्धांत -

इस सिद्धांत का प्रतिपादन द्वितीय विश्वयुद्ध

के बाद हुआ, जिससे मानसून को धीरे धीरे स्पष्ट ढंग से समझा जा सके। जेट स्ट्रीम ऊपरी ध्रुव-मंडल में चलने वाली तीव्र हवा की धारा है, जो निम्न वायुमंडल के ताप, दबाव व वायुमंडलीय दशाओं पर नियंत्रण रखता है या प्रभाव डालता है। दो प्रमुख जेट स्ट्रीम (1. उत्तरी जेट स्ट्रीम - 20° से 38° उ० अक्षांश - अक्षांश रेखाएं ॥ 2. दक्षिणी जेट स्ट्रीम - 0° से 30° उ० अक्षांश - अक्षांश रेखाएं) का प्रभाव भारतीय उपमहादीप पर पड़ता है तथा ये दोनों इस क्षेत्र के मौसम को काफी प्रभावित करते हैं।

पूर्वी जेट स्ट्रीम का आकिर्ण ग्रीष्म ऋतु में ध्रुव के अंतर्ग्रहण से संबंधित है। अत्यधिक सूर्योप विविरण से निम्न-दाब की ऊपरी वायु रेजी से गर्म हवा ऊपर उठती है और पूर्वी जेट स्ट्रीम की उत्पत्ति से बसापक होती है। पूर्वी जेट स्ट्रीम की दिशा पूर्व से दक्षिण की ओर (घड़ी की सुई की दिशा में) होती है। गर्म स्थाव के कारण उपमहादीप के ऊपर के निम्न दाब को धीरे धीरे मजबूत कर देती है। पुनः अत्य सागर के ऊपर आने के बाद सामुद्रिक प्रभाव से यह वायु नीचे बैठने लगती है, जिससे लम्बी अवधि तक और मजबूत हो जाता है। इस स्थिति में मानसून का आगमन अचानक होता है, जिसे 'मानसून प्रस्फोट' कहते हैं। दक्षिण पश्चिम दिशा से आने के कारण इसे दक्षिण मानसून कहते हैं।

श्रीर ऋतु में पूर्वी जेट स्ट्रीम अनुपस्थित होता है और अत्य स्थान उत्तरी जेट स्ट्रीम (दिशा 30° से 50°) ले लेता है। यह जेट स्ट्रीम ठंडी हवा का स्रोत के समान आता है तथा उपमहादीप के पश्चिमोत्तर भाग में अत्यधिक उच्च दाब का निर्माण करता है। फलस्वरूप इस भाग से वायु बंगाल की खाड़ी के निम्न दाब की ओर बहती है। इसे ऊपरी मानसून या लौटता मानसून कहते हैं। बंगाल की खाड़ी

में आकर ऊँचा के निम्नानुसार झुका जाये में कोपेमंडल
तट पर वर्षा बढ़ता है।

अन्य वर्षों में देला जाता कि जेट धीमे ही
उत्पत्ति तथा स्थिति के अनुसार भारतीय मानसून वर्षा
नहीं हुई। अर्थात् यह विधान भी मानसून को स्पष्ट
स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध नहीं हुआ।

40. एल नीनो विधान -

यह मानसून को स्पष्ट करने वाला मौसम
विधान है। इसके अनुसार दक्षिण अमेरिका के पेरू तट
पर चलने वाली गर्म जलवायु एल नीनो का प्रभाव
भारतीय मानसून पर पड़ता है। यह 4-5 वर्षों के
अंतराल पर उत्पन्न होती है। इसका व्यापक प्रभाव
हिंद महासागर तक जा जाता है तो हिंद महासागर में
वनने वाला उच्च वायुदाब कमजोर हो जाता है और
६०°प० मानसून का प्रभाव कम होने के कारण भारत
में जूना की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

प्रारंभिक या चिरसम्मतकालीन विचारधारा (Classical Theory)-



आई० टी० सी० जेड० सिद्धांत (I.T.C.Z. Theory)-

